अशिया और विश्वशांति

रजि० नं० बी ४४४८
लाअिसेन्स नं० १५

हरिजनसेवक

दो आना

(संस्थापक : महात्मा गांधी)

भाग १७ सम्पादक : मगनभाई, प्रभुदास देसाई अंक ५०

मुद्रक और प्रकाशक
जीवणजी डाह्याभाअी देसाअी
नवजीवन मुद्रणालय, अहमदाबाद–९

अहमदाबाद, शनिवार, ता० १३ फरवरी, १९५४

वार्षिक मूल्य देशमें रु० ६
विदेशमें रु० ८; शि० १४

संसारका पहला अहिंसक युद्धवादी

[अहमदाबादके अेस० अेल० डी० तथा कॉमर्स कॉलेजके विद्यार्थियोंके सामने शनिवार ता० २८–९–'४० को चरखा-द्वादशीके अुपलक्षमें दिये हुअे अेक पुराने व्याख्यानका सारांश।]

मुझे आपके विद्यार्थी-मण्डलके अध्यक्षने सत्य और अहिंसाकी निस्बत कुछ कहनेकी सूचना दी है। अिसलिअे यहां आते हुअे मैं सोच रहा था कि मैं आपके सामने पंद्रह-बीस मिनटमें किस मुद्देकी चर्चा करूं कि जिससे आपको सुननेमें तो ठीक, लेकिन मुझे कहनेमें भी मजा आये। अगर मुझे मजा आये तो मैं यह कल्पना कर सकता हूं कि आपको भी मजा आयेगा। अिस परसे जो अेक बात मुझे कहने लायक लगी, वह थोड़ेमें कहूंगा।

१

जगतके अनेकविध लोगोंने गांधीजीका व्यक्तित्व निहारकर अुन्हें कअी प्रकारके 'लेबुल' अिनायत किये हैं। 'महात्मा', 'अवतार' आदिसे लेकर 'धूर्त', 'अुद्दंण्ड', 'पक्का घाघ' अित्यादि तक कअी खिताब दिये गये हैं। अिस परसे मैं सोचने लगा, 'यदि कोअी आज मुझसे पूछे कि आप गांधीजीको कौनसा नाम देंगे, तो मैं क्या जवाब दूंगा?' अिस प्रश्नका विचार करते हुअे मुझे जो अुत्तर सूझा, वह यह है: गांधीजी दुनियाके पहले पैसिफिस्ट — जगतके पहले अहिंसक युद्धवादी — हैं। सो कैसे? — यही अब समझाता हूं।

गांधीजीके सत्याग्रह शब्दसे 'पैसिव रेज़िस्टन्स' (निःशस्त्र प्रतिकार) का जैसा सम्बन्ध है, या सम्बन्ध नहीं है, लगभग वैसी ही स्थिति गांधीजीके जीवन और युरोपके 'पैसिफिज़म' (अयुद्ध-वाद)के सम्बन्धकी बाबत भी है। 'पैसिफिस्ट' और 'पैसिफिज़म' शब्द अंग्रेजी हैं। ये शब्द अुस भाषामें अेक खास अर्थमें प्रचलित हो गये हैं। अुनका यह अर्थ जान पड़ता है कि युद्धका निषेध करनेवाला पैसिफिस्ट है और तद्विषयक जो 'वाद' है वह 'पैसिफिज़म' है। अेक दृष्टिसे यह नकारात्मक और निष्क्रिय भावकी स्थिति है। जिस प्रकार 'पैसिव रेज़िस्टन्स' अेक नकारात्मक दशा है, अुसी प्रकार यह पैसिफिज़म भी है। अिसलिअे युरोपमें अैसा माना जाता है कि जब देशमें अनिवार्य फौजी भरतीका कानून जारी हो जाय, तब युद्ध-निषेधक अुसमें शामिल होनेसे अिनकार कर दे, तो अुसने अपने धर्मका पालन कर लिया।

गांधीजीका मन्तव्य अैसा नहीं है। अिसलिअे १९३१ में जब युरोपके प्रसिद्ध युद्ध-निषेधक अुनसे मिले, तो अुन्होंने अुनकी टीका करके अुन्हें असमंजसमें डाल दिया था। गांधीजीने अुनसे कहा, "आप युद्धमें शामिल होनेसे अिनकार करते हैं; केवल अितनेसे ही आप अपने धर्मका पूरा-पूरा पालन नहीं करते। कारण, टेक्स अदा करके या अन्य रीतिसे आप अपने निष्क्रिय भावके द्वारा युद्धमें मदद तो करते ही हैं।"

अिस प्रकारके भेदको निगाहमें रखते हुअे गांधीजीको आम तौर पर समझे जानेवाले युरोपीय अर्थमें पैसिफिस्ट कहना दुरुस्त नहीं होगा। अुसके बदले अगर अपना शब्द बरतना हो, तो अुन्हें 'सत्याग्रही' कहना चाहिये। परन्तु सुकरात, प्रह्लाद, अीसा मसीह आदि अनेक जगद्विख्यात सत्याग्रही हो गये हैं, अिसलिअे गांधीजीको पहला तो नहीं कह सकते। और 'सत्याग्रही' शब्दके प्रयोगमें अतिव्याप्ति दोष भी होता है। अिसलिअे मैं पैसिफिस्ट शब्दका अुपयोग करता हूं। परन्तु वह अुसके प्रचलित मर्यादित अर्थमें नहीं; वरन् वास्तविक अर्थमें। और अुसी अर्थमें मैं कहता हूं कि गांधीजी जगतके पहले पैसिफिस्ट अर्थात् अहिंसक युद्धवादी हैं।

२

कुछ दिन पहले समाचार-पत्रोंमें मशहूर अंग्रेज युद्ध-निषेधक प्रोफेसर जोडका अेक रेडियो पर दिया हुआ प्रवचन प्रकाशित हुआ था। अुसमें अुन्होंने यह समझाया था कि, "जिन्दगीभर युद्ध-निषेधक रहा हुआ मैं क्योंकर आज जर्मनीके खिलाफ होनेवाले युद्धका हिमायती बन गया हूं?" अुनके कथनका सार यह था कि खूंखार युद्धसे भी अधिक अनिष्ट कुछ हो सकता है, अैसा मैं मानता हूं। और जर्मनीका नाजीवाद अैसा ही अेक अनिष्ट है। अिसलिअे युद्ध करके भी अुसे रोकना चाहिये। वे अिस हद तक युद्ध-निषेधक तो हैं कि अगर युद्धके बिना वह रोका जा सके, तो शायद रोकेंगे। परन्तु अुनकी अैसी धारणा है कि बलके बिना नाजीवाद रोका ही नहीं जा सकता। "परिस्थिति अैसी हो गअी है कि बलके बिना वह रोका ही नहीं जा सकता। अिसलिअे मुझे, जो कि निरी अुपयोगवादी नीतिका अनुसरण करता है, अैसा प्रतीत होता है कि लड़ाअीके अनिष्टसे भी बढ़कर घोरतर अनिष्ट संसार पर आनेवाला नाजी सत्ताका पंजा है। अुसका अुपाय लड़ाअी ही है।"

आप आसानीसे समझ जायंगे कि अिस न्यायसे तो लड़ाअीका निषेध करना सम्भव ही नहीं है। आप अपनी चाहे जिस प्रिय चीजके नाशको लड़ाअीसे बढ़कर अनिष्ट-कर घोषित कर लीजिये। अिस न्यायसे कौनसी लड़ाअी नहीं हुअी? तब तो पैसिफिज़म या युद्ध-निषेधका कोअी मुद्दा ही नहीं रह जाता।

परन्तु यह बहस जाने दीजिये।

श्री जोडका यह विचार है कि ब्रिटिश साम्राज्यशाहीने जिस जीवन-नीति और जीवन-व्यवस्था तथा दर्शनका विकास किया है, वह अितने मानवतावादी और मानव्यके पोषक हैं कि अुसमें सारे संसारका कल्याण है। अैसी सर्वोत्तम वांछनीय वस्तु पर हमला करनेवालेको मारनेमें युद्धके खूंरेज हथियार योग्यता पाते हैं। भले मानसको अितना भी भान नहीं कि अेक पैंतीस करोड़का अितना बड़ा देश पड़ा है, जो अिसी नीतिकी भीषणताका शिकार

www.vinoba.in

हो रहा है। जोड जैसे विद्वान् और विचारक जानकार भी अितने अंध और जनूनी हो सकते हैं, यह समयका ही प्रताप कहना चाहिये।

३

जरा दूसरी तरफ भी नजर डालिये। सत्यका निर्णय करनेके लिअे हमें पाठ्य-पुस्तकोंमें यह पाठ पढ़ाया जाता है कि ढालकी दो बाजुअें होती हैं। सत्य किसीकी मीरास नहीं है। यह मान्यता प्रगतिशीलता और विचारशीलताकी नींव है। अिस मूल भित्तिको अक्षत रखना हो, तो सब विचार-पद्धतियोंके प्रति अुदार समभाव रखना चाहिये। अिस दृष्टिसे मैं पूछता हूं कि हिटलर क्या कहता है? मुसोलिनी क्या कहता है? स्टैलिन क्या कहता है? क्या वे भी अपने-अपने अेक दर्शनके नाम पर जिहाद नहीं छेड़ रहे हैं? क्या अुनके मुंहमें भी 'शांति' और 'युद्ध-निषेध' शब्द नहीं हैं? क्या वे भी अुनकी दृष्टिसे अेक महान अनर्थको टालनेके लिअे युद्धरूपी अनिष्ट सह लेनेकी भाषा नहीं बोलते?

अिस प्रकारकी दलीलें देकर मैं यह सिद्ध नहीं करना चाहता कि वे सच्चे हैं। दोनों पक्ष सचाअीसे यह मान सकते हैं कि वे संसारका अुद्धार करनेके लिअे प्रस्तुत हुअे हैं। अिसके विषयमें सत्य-भक्त या शांतिवादीको सन्देह करनेका कारण नहीं है। सत्यासत्यके विषयमें हमेशा अिसी प्रकारकी द्विपक्षी पहेली हमारे सामने अुपस्थित होती है। और अितिहासमें अुसका समाधान युद्धसे होता आया है। हाल ही में भारत-मंत्री श्री अेमरीने कहा है कि अगर गांधीजीको युद्धके प्रति हार्दिक विरोधभाव है, तो दूसरी ओर वाअिसरॉयको अुतने ही तीव्र भावसें अैसा लगता है कि हिन्दुस्तानकी युद्धकी तैयारीमें कोअी रुकावट न आनी चाहिये। आम जनतामें आजकल अिसी रूपमें झगड़े अुपस्थित होते हैं।

असलमें गुत्थी यह नहीं है कि दोनों पक्ष सत्य और अीश्वरकी दुहाअी देते हैं। यहां तो जुदा ही सवाल है; और वह है गांधीजीके पैसिफिज्मका। वे कहते हैं कि जब सत्यका विवाद हो तो अुसका निपटारा करनेका अुपाय युद्ध हरगिज नहीं है। जगतको युद्धका अितना कड़ुआ अनुभव है कि कोअी भी असत्य युद्धकी अपेक्षा ज्यादा असत्य या अनिष्ट नहीं हो सकता। अिस बातको मैं पैसिफिज्म या शांतिवादका मूल आधार मानता हूं। यह आधार खिसक जाय तो जिस प्रकार अैन मौके पर जोड साहबकी अिमारत गिर गअी, अुसी प्रकार पैसिफिज्मकी अिमारत भी गिर पड़ेगी।

४

अिस सिलसिलेमें अेक दूसरी अैतिहासिक घटनाका अुल्लेख करना प्रासंगिक होगा। आज हम सबको 'क्रूसेड' यानी युरोपीय धर्म-युद्ध अज्ञानमूलक जान पड़ते हैं। मजहबी जनून अगर खूंरेजी करने लगे, तो हम आधुनिक मतवादी लोग अेक आवाजसे अुसकी निन्दा करते हैं। क्यों भअी? कदाचित् प्राचीन रूपके धर्ममें हमारे जमानेकी श्रद्धा नहीं है अिसलिअे। कदाचित् अनुभवसे हमारी यह धारणा हो गअी है कि अिस तरह लड़नेसे धर्मका श्रेय तो कदापि नहीं है। कदाचित् अुसमें छिपी हुअी अनर्थताका हमें दर्शन हो गया है। यह चाहे जिस कारणसे क्यों न हुआ हो, परन्तु मैं अैसा मानता हूं कि जगतने क्रूसेडोंसे परे होकर अेक बड़ी भारी मंजिल पार की है।

परन्तु क्या हम यह महसूस नहीं करते कि हम भी आज अपने 'अिज्म', 'अैसी' या 'वादों' से पुराने लोगोंके मजहबी जनूनकी तरह ही चिपटे हुअे हैं? "मेरी 'डॉक्सी' मेरी है और तेरी 'डॉक्सी' जाय भाड़में," अिस प्रकारके पुराने धर्म-जनूनकी याद दिलानेवाली वृत्ति क्या आज भी हमें प्रमाण नहीं मालूम होती? क्या अिस वृत्तिमें प्राचीन धर्मोन्माद और क्रूसेडका नये रूपमें नया अवतार नहीं है? अिस प्रश्न पर बड़ी शांतिसे और अपने राग तथा द्वेषोंको कुछ देरके लिअे काबूमें रखकर विचार करनेकी सूचना मैं आपको देता हूं। अगर मैं आज अेक हिन्दूके नाते किसी अीसाअी या मुसलमानको लड़ाअीके लिअे ललकारूं, तो आप मेरे धर्मोन्माद पर हंसेंगे। परन्तु अगर मैं नाजीवाद या संहतिवादका पक्ष लेकर बोलूं तो? शायद कअी लोगोंको लगेगा कि मुझे कोअी मारे, तो अुसमें पाप नहीं है। यह वस्तु पैसिफिज्म नहीं है। गांधीजीकी परिभाषामें कहूं, तो शत्रुके भी कल्याणकी चेष्टा करनेवाले पैसिफिस्टकी यह रीति नहीं होगी।

तो क्या दोनोंको सही मानकर हाथ-पैर जोड़कर बैठे रहें? क्या नाजीवाद या संहतिवादकी तानाशाही सह लें? क्या भीरुता या निष्क्रियता ही पैसिफिज्म है?

नहीं, हरगिज नहीं। अिसीलिअे गांधीजी युरोपीय पैसिफिस्टोंकी जातिके नहीं हैं, यह मैं शुरूमें ही कह चुका हूं। और अिसीलिअे वे अुस शब्दके सम्पूर्ण अर्थमें पैसिफिस्ट हैं। वे कहते हैं कि अहिंसक ढंगसे, सत्याग्रहसे, सामना करना चाहिये। भीरुता और सत्यमें कभी बन ही नहीं सकती। सत्यका सच्चा और कल्याणकारी बल सत्याग्रह है और अुसके द्वारा हमें जो सत्य प्रतीत होता हो, अुसके लिअे लड़ना चाहिये।

५

यह संक्षेपमें गांधीजीकी सत्याग्रहकी कल्पना है। परन्तु अुन्होंने अब तक राष्ट्र राष्ट्रके बीच होनेवाले युद्धोंके क्षेत्र तक अिसका विस्तार नहीं किया था। अिसीलिअे १९२० के पहले वे लड़ाअीमें भाग लेनेके लिअे तैयार हो गये थे।

यह अेक पहेली या विसंवादी बात ही थी, अैसा ही कहना चाहिये। अुस वक्त वे यह कहनेको तैयार नहीं थे कि राष्ट्रोंको भी अहिंसाके अस्त्रसे ही लड़ना चाहिये। परन्तु आज वे ब्रिटेनको सलाह देते हैं कि शस्त्र त्याग कर अहिंसासे लड़ो, तो मैं अपनी सेवायें तुम्हारे सम्मुख अुपस्थित करता हूं। वे अपने देशसे कहते हैं कि नैतिक अहिंसक मदद ही धर्म्य है। हिन्दुस्तानने अगर अहिंसाका वरण किया है, तो अुससे खून-खराबीके रास्ते कदापि नहीं जाया जायगा। बल्कि अहिंसामय युद्धकी घोषणा करनेका, जगतको नया सन्देश देनेका, यही अुत्तम सुयोग है।

गांधीजीकी यह विशेषता अुन्हें संसारके सभी पैसिफिस्ट कहे जानेवाले लोगोंसे अलग करती है। वे स्वयं भी १९४० से पहले अिस स्थान पर नहीं थे। या यों कहिये कि बीजरूपमें थे, सो अब अिस वर्ष विकसित हो गये हैं। अिस प्रकार १९४० का यह वर्ष अुनके जीवनमें चिरस्मरणीय रहेगा। वे हमेशा कहते रहते हैं कि मैं वृद्ध होता जा रहा हूं, तो भी मेरा विकास तो निरंतर होता ही जा रहा है। अगर किसीको अिसका सबूत चाहिये, तो अी० सन् १९४० वह सबूत पूरा-पूरा पेश करता है।

६

"बुद्ध, अीसा, कृष्णादि भी तो शांतिवादी थे। क्या गांधी अुनके भी सिरमौर हो गये जो अुन्हें भी आप पहले नहीं मानते?" अैसा प्रश्न शायद आपके दिलमें अुठेगा। महापुरुषोंमें अिस प्रकारके तरतम भावकी छानबीनमें पड़ना अेक तरहकी आत्मवंचना है। मैं अुसमें नहीं फंसूंगा। यहां मैं आपको अितिहासकारोंके अेक कथनकी याद दिलाना चाहता हूं — "महापुरुष अपने समयके समाजको गढ़ते हैं, यह सच है। परन्तु साथ-साथ अिसका प्रतिप्रमेय भी अुतना ही सच है कि अुनका जमाना और समाज भी अुन्हें गढ़ता है।" सत्य अिन दोनोंके मध्यमें है। अगर बुद्ध या अीसा आजके जमानेमें होते, तो वे दूसरे ही रूपमें प्रगट हुअे होते। यह कोअी अितिहासज्ञ अस्वीकार नहीं करेगा। गांधीजीके सम्बन्धमें तो हम प्रत्यक्ष देख सकते हैं कि काल और परिस्थिति अुन्हें गढ़ते हैं और वे स्वयं अपने जमानेको अपने हृदयदेव, अुपास्य, के नाते परिवर्तित रूप देते जाते हैं।

www.vinoba.in

आप कहेंगे, "अिन महापुरुषोंकी बात जाने दें, किन्तु टॉल्स्टॉय, गैरिसन जैसे युद्धनिषेधकोंको भी क्या आप पहले नहीं कहेंगे?" जहां तक युद्धसे अिनकार करनेका ताल्लुक है, ये लोग संसारके अितिहासमें अवश्य पुरोगामी पुरुष हैं। परन्तु मैंने जिस प्रकारके पैसिफिज़मका अूपर वर्णन किया है, अुसकी दृष्टिसे देखने पर अुनमें अेक त्रुटि दिखायी देती है। वह यह कि अुन्होंने हिंसक युद्धका अहिंसक पर्याय नहीं सुझाया था। अुन्होंने युद्धके समय निवृत्त होकर निष्क्रिय निषेध करना जरूर बताया था, परन्तु सक्रिय निःशस्त्र पद्धतिसे लड़नेकी बात नहीं सोची थी। अितने अंशमें अुनका पैसिफिज़म अधूरा था। अिसलिअे आज यह पैसिफिज़म युरोपमें अेक प्रकारके निवृत्ति-मार्गके जैसा हो रहा है। अिसलिअे अुसने खूंखार युद्धभावको रोकनेका, रुद्ध करने या अुसका अहिंसक रूपान्तर करके अुसे नष्ट करनेका बल नहीं कमाया है।

गांधीजी अिस दशासे सन्तुष्ट नहीं रह सकते। अुन्हें तो सक्रिय रूपसे कुछ न कुछ करनेकी वृत्ति चाहिये और हम अुसे अपने देशमें देख रहे हैं। अिसीलिअे मैं अुन्हें संसारका सर्व-प्रथम अहिंसक युद्धवादी या पैसिफिस्ट कहता हूं। और यह पदवी अुन्होंने अिसी वर्ष कमायी है। अिस दृष्टिसे अुनकी ७२वीं वर्ष-गांठ विशेष रूपसे संस्मरणीय मानी जानी चाहिये। हमारे लिअे और हमारे देशके भविष्यके लिअे भी वह चिरस्मरणीय हो।

मगनभाई देसाई

आंध्रमें शराबबन्दी

श्री सीताराम शास्त्री और दो दूसरे मित्र आन्ध्रसे लिखते हैं:

"आपको यह जानकर, खुशी होगी कि आन्ध्रके कर्मठ और अनुभवी नेता श्री गडीचारला हरिसर्वोत्तमरावकी अध्यक्षतामें आन्ध्र देशके हम कुछ प्रमुख रचनात्मक कार्य-कर्ताओंका यहां कल (२५-१-'५४) अेक सम्मेलन हुआ।

"तीन सदस्योंकी अेक कमेटी बनाअी गअी है, जो शराबबन्दी कानूनके अमलकी जांच करके १५ फरवरीसे पहले —यानी बजट अधिवेशनके मध्यमें — अपनी रिपोर्ट प्रकाशित करेगी। डर है कि यह कमेटी शराबबन्दी रद्द करनेके पक्षमें अपनी राय देगी, ताकि सरकार १ अप्रैलसे सारे आन्ध्रमें फिरसे ताड़ी और अरककी बिक्री शुरू करनेका कानून बना सके और बजटके पूरे घाटे या अुसके अेक हिस्सेकी पूर्ति कर सके। अगर अैसा हुआ तो यह सबसे बुरा प्रतिगामी कदम होगा, जो समाजके नीचेसे नीचे तबकेके लाखों गरीब स्त्री-पुरुषोंकी — जिनमें हरिजन और आदिम जातिके लोग भी शामिल हैं — तन्दुरुस्ती और सलामतीको खतरेमें डाल देगा।

"हमने सरकारके अिस कदमका सामना करनेका पक्का निश्चय कर लिया है। हम अपनी पूरी ताकत लगा कर अुसका विरोध करेंगे और अगर जरूरत हुअी तो अुसके लिअे अूंचीसे अूंची कीमत चुकानेको — अपने कीमती प्राणोंका बलिदान करनेको भी तैयार हैं। लेकिन अुस हद तक जानेके पहले हम दूसरे सारे तरीके आजमा लेना चाहते हैं। अिसलिअे हम आपके सुझावके मुताबिक अखिल भारतीय शराबबन्दी लीगकी स्थापना करके सारे देशमें, खास करके आन्ध्रमें, अुसकी शाखायें खोलना चाहते हैं। अिस सम्बन्धमें हमें गत वर्षके चांडिल सर्वोदय-सम्मेलनके प्रस्तावका लाभ मिला। हमने वर्धाके सर्व-सेवा-संघसे अपील की है कि वह अिस लीगकी स्थापनाके लिअे और अुसका योग्य विधान बनानेके लिअे जरूरी कदम अुठावे और सर्व-सेवा-संघके आगामी अधिवेशनमें अुसे पेश करे।"

मेरी यही शुभकामना है कि आन्ध्रके मेरे अिन सह-कार्यकर्ताओंको अपने प्रयत्नोंमें सफलता मिले। अुन्हें चारों तरफसे मदद और प्रोत्साहन मिलना चाहिये। सर्व-सेवा-संघ अुन्हें जरूर हर तरहकी मदद देगा। लेकिन स्वाभाविक प्रश्न तो यह अुठता है कि कांग्रेस क्या करेगी? जो सरकार शराबबन्दी रद्द करनेकी हिम्मत दिखा सकती है, अुसे क्या कांग्रेसी सरकार कहा जा सकता है? मौके-बेमौके कांग्रेसके जिम्मेदार नेता हमसे कहा करते हैं — कुछ ही दिन पहले ३० जनवरीको हमने अिस बातमें अपना पक्का विश्वास जाहिर किया है — कि हम राष्ट्रपिता द्वारा बताये गये आदर्शोंका पालन करते हैं। मुझे यकीन है कि अिस बातसे कोअी अिनकार नहीं करेगा कि आन्ध्रमें जिस बातका डर पैदा हो रहा है, वह बेशक अैसी है जिसे करनेकी गांधीजीने न तो कभी हमें अिजाजत दी होती, न वे अैसा हमसे कभी करवाना चाहते। कांग्रेस और भारतका संविधान शराबबन्दीका ध्येय अपने सामने रखते हैं। शराबबन्दीको स्वीकार कर लेनेके बाद अुसे रद्द करना संविधानकी धारा ४७का सरासर भंग करना है, जो कहती है कि राज्य नशीले पदार्थों और शराबके अुपयोग पर प्रतिबन्ध लगायेगा।

क्या कांग्रेस वर्किंग कमेटी अिस प्रश्न पर विचार करके अपनी आन्ध्र-सरकारका सही मार्गदर्शन करेगी? अिस विषयमें केन्द्रीय सरकारको भी अपना फर्ज अदा करना चाहिये। यह देखना अुसका काम है कि अेक-सवा करोड़का छोटा घाटा दूसरे साधनोंसे पूरा हो जाय या आखिरमें राष्ट्रीय विकास कार्यक्रमके मातहत सरकारी आर्थिक सहायता देकर अुसकी पूर्ति की जाय। शराबबन्दी बेशक किसी लोकहितकारी राज्यकी राष्ट्रीय योजनाका बहुत महत्त्वपूर्ण और आवश्यक अंग है।

४-१-'५४ **मगनभाई देसाई**

(अंग्रेजीसे)

किसानोंमें अर्धबेकारीका परिमाण

हमारे देशमें पूरे समयके बेकार लोगोंकी अपेक्षा अर्धबेकार किसानोंका सवाल बड़ा है, अिस बारेमें पूनाके कृषि कॉलेजके प्रो० ड्राअिवरने अपने अेक लेखमें जो थोड़ी-बहुत हकीकतें पेश की हैं, वे ध्यान खींचने जैसी हैं। अुन्होंने बम्बअी राज्यके चार भिन्न-भिन्न जिलोंके गांवोंकी १९५२-५३ के वर्षमें हुअी जांचके आधार पर जो निष्कर्ष निकाला है, वह अिस प्रकार है:

जिला	गांव	कामके दिन प्रतिशत	बिना कामके दिन प्रतिशत	बीमारी और कौटुम्बिक काममें बीते दिन प्रतिशत
अहमदाबाद	खडोल	१८	६५	१७
थाणा	कुरझे	३५	१२.६	५२.४
धारवाड़	लखूंडी	८३.३	११.७	५.०
पूना	नावरा	४९	४४	७.०
	औसत	४६.३	३३.३	२०.४

अिस परसे मालूम होता है कि पूरे कामके दिन आधेसे भी कम हैं, जबकि ३३ प्रतिशत दिन बेकार जाते हैं। बीमारी और कौटुम्बिक-सामाजिक कामोंमें बीतनेवाले दिनोंको गिनने पर बेकार दिनोंकी संख्या पचास प्रतिशतसे भी अधिक बढ़ जाती है। अिन दिनोंका बेकारीके हिसाबमें खयाल रखना चाहिये और अुसका अवश्य अुपाय सोचना चाहिये। अिस विचारसे रहित आयोजन आयोजन नहीं कहा जायगा। अुसी प्रकार अिनका हिसाब लगाये बिना दिये गये बेकारीके आंकड़े सही नहीं माने जायंगे।

(गुजरातीसे) **विट्ठलदास कोठारी**

www.vinoba.in

हरिजनसेवक

१३-फरवरी १९५४

अेशिया और विश्वशांति

लंकाके प्रधानमंत्री सर जॉन कोटेलावाला दिल्ली आये और जो भारतीय अुनके देशमें बरसोंसे बसे हुअे हैं अुनके वहांके नागरिक अधिकारोंके विषयमें हमारी सरकारके साथ समझौता करके चले गये, यह खुशीकी बात है।

और वे अिस सम्बन्धमें भी बात करते गये कि अुन्होंने अेशियाके निम्न लिखित पांच राष्ट्रोंके प्रधान-मंत्रियोंकी अेक परिषद् कोलम्बोमें बुलानेका निर्णय किया है — ब्रह्मदेश, लंका, भारत, अिंडोनेशिया और पाकिस्तान। अुनकी यह दूसरी बात आजकी आंतरराष्ट्रीय राजनीतिमें बड़ा महत्त्व रखती है — खास करके पाक-अमरीकी फौजी करारसे पैदा होनेवाले वातावरणके कारण।

पिछले महायुद्धके समयसे दक्षिण-पूर्वी अेशिया नामसे अेक नया भौगोलिक क्षेत्र पहचाना जाने लगा है। द्वितीय विश्वयुद्धकी जापानके विरुद्ध रची गअी व्यूहरचनामें अिस भागके महत्त्वको समझकर युरोप-अमेरिकाके देशोंने अिसे अेक विशेष क्षेत्र माना और अुसे अेक खास युद्धक्षेत्र निर्धारित करके अुसका अलग सेनापति नियुक्त किया था। हम जानते हैं कि अुस पद पर लार्ड माअुण्ट बैटन थे।

युद्धके कारण महत्त्वपूर्ण बना हुआ यह भूखंड बादमें केवल भौगोलिकसे आगे बढ़कर अपने-आप राजनैतिक महत्त्वका क्षेत्र भी बन गया। यह दूसरे विश्वयुद्धकी अेक बड़ी महत्त्वपूर्ण फलश्रुति कही जायगी। अेक हिन्दुस्तानमें से चार स्वतंत्र राष्ट्र अुत्पन्न हुअे — लंका, ब्रह्मदेश, पाकिस्तान और भारत। अिसके अलावा अिन चारोंके बाद अिंडोनेशिया स्वतंत्र हुआ। अिसमें अुसे भारतका बहुत बड़ा सहारा और मदद मिली। दोनों देशोंका यह कोअी छोटा-मोटा आध्यात्मिक सम्बन्ध नहीं है। अुस समय भारतने अेशियाअी देशोंकी परिषद् दिल्लीमें बुलाअी थी, यह याद रखना चाहिये।

अेशियाके अैसे पांच स्वतंत्र राष्ट्रोंका घटक आन्तरराष्ट्रीय जगतमें अपनी नअी छाप डाले यह स्वाभाविक है। और ये राष्ट्र अेक साथ मिलकर अपने सामान्य कल्याण, विकास और अुन्नतिके बारेमें विचार करें, यह सर्वथा अुचित है। यह विचार युद्धके लिअे नहीं बल्कि जगतके सुख, शांति और समृद्धिके लिअे होगा, यह अुसका अेक बड़ा स्तुत्य पहलू माना जायगा।

पृथ्वीके अिस भागमें हिन्दचीन, मलाया, कंबोडिया वगैरा जैसे अन्य महत्त्वपूर्ण देश भी हैं। लेकिन ये देश अभी अुपनिवेशवादी गोरे राष्ट्रोंकी पिछली सदीकी नागपाशसे छूट नहीं पाये हैं — छूटनेका प्रयत्न कर रहे हैं। लेकिन फ्रेंच प्रजा अभी नये युगके मंत्रको स्वीकार करके चलनेके लिअे तैयार नहीं है। हमारे देशमें भी अुसके दो-चार जो छोटे-छोटे अुपनिवेश हैं, अुन्हें छोड़नेके लिअे भी वह कहां तैयार है?

अिस कारणसे यह भूभाग दुनियाके साम्यवादी और स्वातंत्र्यवादी नामसे बंटे हुअे दो शक्ति-गुटोंके शीतयुद्धका शिकार बना हुआ है। अिसका असर अूपरके पांच स्वतंत्र राष्ट्रों पर भी पड़ना स्वाभाविक है। ये दो शक्ति-गुट अिन्हें भी अपने पक्षमें मिलानेकी ताकमें रहते हैं। अिसका परिणाम यह हो सकता है कि अुन दोनों गुटोंके बीच चल रहा शीतयुद्ध अिन देशोंमें भी सीधा पहुंच जाय। अैसी हालतमें अमेरिका-पाकिस्तानका फौजी करार बिलकुल निर्दोष या मामूली घटना नहीं कहा जा सकता।

जाहिर है कि भारतका अिन पांच राष्ट्रोंमें महत्त्वका और मुख्य स्थान है। वह दोनोंमें से अेक भी शक्ति-गुटमें शरीक होना नहीं चाहता। अिसमें भारतकी जो स्वतंत्र दृष्टि और नअी नीति है, वह अमेरिकाको खटकती है। अुसे शायद यह डर है कि ये पांच राष्ट्र कहीं रूस-चीनकी तरफ न चले जायं। और भारत संयुक्त राष्ट्रसंघमें चीनका थोड़ा बहुत पक्ष लिया ही करता है, अिससे अमेरिकाका यह शक और बढ़ जाता है। अिसके बावजूद भारत सचमुच ही शांति चाहता है। भारत किसी गुटमें शामिल नहीं है, और लोकशाहीका पुजारी है, अैसा अमेरिकाको विश्वास नहीं होता यह बड़े दुःखकी बात है। हमें अपने कार्योंसे यह विश्वास अमेरिकामें पैदा करना चाहिये। अगर भारत अुसका हृदय-परिवर्तन कर सके, तो कहा जायगा कि भारतने अेक भारी सत्याग्रही विजय पा ली।

पाकिस्तानिके प्रधानमंत्री आगामी कोलम्बो-परिषद्में जानेके बारेमें आनाकानी कर रहे हैं। क्योंकि अमेरिकासे जो फौजी करार वे करना चाहते हैं, अुसकी चर्चा परिषद्में हो यह अुन्हें पसन्द नहीं। परिषद् अिस प्रश्नकी चर्चाके लिअे नहीं हो रही है; अिसलिअे श्री कोटेलावालाने आसानीसे अुन्हें अिसका विश्वास दिलाया है कि परिषद्में अिसकी चर्चा नहीं होगी।

अिस परिषद्का प्रयोजन दूसरा ही है। श्री कोटेलावालाने अपने दिल्लीके भाषणमें यह प्रयोजन बताया है। (यह भाषण अिसी अंकमें अन्यत्र दिया गया है।) गोरोंके साम्राज्यवादी जालसे अभी-अभी छूटे हुअे ये देश पड़ोसी राष्ट्र हैं। वे साथ मिलकर अपने आर्थिक कल्याण और विकासका विचार करें यह स्वाभाविक है। अिसका आधार युद्धनिषेध और विश्वशांति तथा स्वदेशी और परस्पर सहयोगसे सिद्ध होनेवाला स्वावलम्बन होना चाहिये। अैसा हो तो वह विश्वशांतिकी दिशामें अुठाया गया अेक कीमती कदम माना जायगा। भारतका संविधान कहता है कि वह अिस अुद्देश्यकी सिद्धिके लिअे प्रयत्न करेगा। दुनियासे युद्धका अन्त करना हो, तो अुसका कोअी अुपाय सारे राष्ट्रोंको विचारना होगा।

अिसके दो रास्ते हैं: १. देशकी आन्तरिक आर्थिक नीति; २. विदेशोंके साथ सम्बन्ध। पहलेमें यह सवाल खड़ा होता है कि हमारा देश पश्चिमकी अर्थव्यवस्थाको अपनाकर यंत्रोद्योगोंकी स्पर्द्धा और बाजारोंकी छीनाझपटीमें पड़ेगा या स्वदेशी और ग्रामोद्योगों पर खड़ी विकेन्द्रित अर्थव्यवस्थाका विकास करेगा? दूसरेमें मुख्य सवाल यह है कि अन्य राष्ट्रोंके साथ भारतका सम्बन्ध मैत्री और शांतिपूर्ण होगा या किसी न किसी देशके प्रति शंका या वैरभाव रखकर वह अन्य देशोंके साथ सांठगांठ करेगा?

भारत विदेशोंके साथ कैसा सम्बन्ध रखेगा, अिस दूसरे प्रश्न पर वह अपना रुख साफ बताने लगा है। लेकिन यह कहना होगा कि आन्तरिक आर्थिक नीतिके पहले प्रश्नके बारेमें अुसका रुख अितना साफ और निश्चित नहीं है। यह हमें स्पष्ट समझ लेना चाहिये कि पहले प्रश्नके बारेमें हमने कोअी निश्चित रुख अख्तियार न किया, तो हमारा विदेश-नीतिका प्रश्न भी अुलझनमें पड़ेगा। क्योंकि आजके युद्धोंका कारण राष्ट्रोंकी होड़वाली यंत्रोद्योगी अर्थ-नीति और जीवनमानको कैसे भी साधनोंसे अूंचा अुठानेका पागलपन है। जो राष्ट्र अिसमें सुधार नहीं करेगा, वह देर-अबेर किसी अन्य राष्ट्रके वैर या अीर्ष्याका शिकार बनेगा और अुससे वातावरण अवश्य बिगड़ेगा। आगामी कोलम्बो-परिषद् अगर शांतिके अिस रास्ते ले जानेवाली सिद्ध हो, तो कहा जायगा कि अुसने गांधीजीके सर्वोदय और अहिंसाके रास्तेकी अेक कठिन मंजिल तय कर ली।

३०-१-'५४
(गुजरातीसे)

मगनभाई देसाई

www.vinoba.in

भारतको ताकतवर बनानेकी योजना

[ता० ६-१-'५४ को लालगंज पड़ाव, जिला मुजफ्फरपुर, पर किये गये प्रार्थना-प्रवचनसे।]

अंग्रेज सरकारके जमानेमें अेक अेक ग्रामोद्योग टूटता गया। स्वराज्य-प्राप्तिके बाद यंत्रोंकी भरमार लगायेंगे तो जो ग्रामोद्योग बचे खुचे हैं वे भी टूट जायंगे। तो क्या ग्रामोंकी जनता सुखी होगी? जो तालीम अंग्रेजोंने चलाअी वही तालीम हम चला रहे हैं। अुससे बेकारी बढ़ रही है यह अब ध्यानमें आ रहा है। यह ध्यानमें आनेके लिअे क्या छः सालकी आवश्यकता थी? यह तो हर कोअी जानता था कि अुन्होंने जो तालीम चलाअी वह गुलाम बनानेके लिअे चलाअी और वही तालीम हमने जारी रखी तो देश आगे कैसे बढ़ेगा? देशका अुत्कर्ष कैसे हो सकता है? पर छः सालके बाद अब ध्यानमें आ रहा है कि तालीम बदलनी चाहिये। जो समझदार थे, महात्मा गांधी जैसे, वे कह चुके थे कि तालीम बदलनी होगी। अुन्होंने तालीम सुझायी भी। वह पसन्द नहीं आयी तो चार छः माह स्कूल-कॉलेज बन्द रखते और कमेटी बैठाकर सलाह-मशविरा करते। मैंने कहा था, नये राज्यमें पुराना झंडा तो अेक मिनटके लिअे भी सहन नहीं कर सकते। क्या अैसा कहते हैं कि अभी नया झंडा तय करना है, अिसलिअे पुराना ही रखेंगे? नहीं, नये राज्यमें नया ही झंडा हो सकता है। वैसे ही नये राज्यमें नयी तालीम ही हो सकती है। यह हमने १९४७ में ही कह दिया था। हमने कहा था कि हमें तालीम बनाना है, तो हरजा नहीं; चार छः माह शिक्षा बन्द रखो, बच्चोंको खेलने-कूदने दो। देरीसे भी क्यों न हो। हम वह कर सकते हैं क्योंकि हम आजाद हैं। अगर हम आजाद नहीं होते तो अिच्छा होते हुअे भी तालीम नहीं बदल सकते। पर आज हम तालीम बदल सकते हैं। ग्रामोद्योग खड़े कर सकते हैं। भूमिहीनोंको जमीन बांट सकते हैं। यह न करें और अुलटा ही करें कि बड़े-बड़े जमींदारोंके पास ही जमीन जाये तो? जमींदारी गअी लेकिन अब फार्मदारी आयी। बड़े-बड़े फार्म हैं और अुनमें ट्रेक्टर चलते हैं। अुनमें मजदूर बेचारे बैलकी तरह काम कर रहे हैं। बैल खेतमें काम करता है। फसल अुसे देखनेको मिलती है, लेकिन खानेको नहीं मिलती। वैसे ही मजदूर फसल देखते हैं, फसल पैदा करनेमें मदद करते हैं पर खानेको अुन्हें नहीं मिलती। अुनके लिअे सस्ते गल्लेकी दुकानें खोलते हैं। सस्ते अनाजकी दुकानें यानी रद्दी अनाज। यह नहीं होता कि फार्ममें मजदूरका अेक हिस्सा है और अुसे अुपजका अेक हिस्सा दें। मालिक और मजदूरमें साझा नहीं। बैलके साथ क्या साझा होगा? आप और हम मिलकर मिल्कियत बांट लें, क्या अैसा बैलके साथ साझा होता है? मगर कोअी फार्मवाला कहे कि ५०० मजदूर हैं और हम हैं। यह ५०१ लोगोंका खेत है। और अुसकी फसलका हिस्सा हरअेकको मिलेगा — तो हम समझते हैं कि भूदानका काम किया। लेकिन आज यह नहीं होता। मजदूरकी बुद्धिका कुछ विकास ही नहीं हुआ है। बैलकी बुद्धिका क्या विकास होता है? खेतके साथ अुसकी आत्मीयता हो यह भी नहीं। अैसी यह फार्मदारी शुरू हुअी। अिसको हम बढ़ावा दें यह क्या है? यह हमने स्वतंत्रतामें किया। यानी स्वतंत्रतामें हम अुन्नत भी हो सकते हैं और गिर भी सकते हैं। हमने अुन्नतिके लिअे तीन बातें सोची हैं:—

१. जो कच्चा माल गांवमें पैदा होता है, अुसका पक्का माल गांवमें ही बनना चाहिये। अितने सारे लोग कपड़ा पहने हैं, सारा मिलसे खरीदा हुआ है। अिस तरह खरीदें तो खेतीके सिवाय दूसरा काम ही हमें नहीं रहेगा। दिन प्रतिदिन खेती घटनेवाली है और जनसंख्या बढ़नेवाली है। अिसलिअे खेतीका आधार अुत्तरोत्तर कम होगा। अिसलिअे बहुत जरूरी होगा कि खेतीके अलावा और काम हो। आज करते क्या हैं? तिल्ली बोयेंगे और तेल खरीदेंगे। गन्ना बोयेंगे और शक्कर खरीदेंगे। कपास बोयेंगे और कपड़ा खरीदेंगे। अगर अैसा ही चला तो गांवके लोग भूखे रहेंगे, क्योंकि अिसके लिअे अुन्हें अनाज बेचना ही पड़ेगा। अनाज बिना बेचे कपड़ा नहीं प्राप्त कर सकते। नतीजा यह होगा कि अुनके पास कोअी ताकत नहीं रहेगी। हम अुत्तर प्रदेशमें घूमते थे। गोरखपुरमें अकाल पड़ा था। सरकारने कहा अनाज वहां भेजा है। वहां अकाल नहीं है, अकाल-सा है। अनाज तो भेजा है पर लोगोंमें खरीदनेकी शक्ति नहीं है। अिसका कारण क्या है? क्योंकि लोगोंको दूसरा धन्धा ही नहीं है। ग्रामोद्योग खतम हो गये हैं। अिसलिअे हम गांव-गांवमें ग्रामोद्योग खड़े करना चाहते हैं। अपना तेल बना लें, अपना कपड़ा बना लें, अपने जूते बना लें। आजकल बाटाका जूता पहनते हैं, कहते हैं कि सस्ता पड़ता है। पराधीन बन गये हैं। तुलसीदासजीने कहा था "पराधीन सुपनेहु सुख नाहीं।" अगर अैसे ही पराधीन रहे, तो गांवके लोग हरगिज सुखी नहीं हो सकते।

२. दूसरी बात, जमीनका बंटवारा करना ही चाहिये। जमीन परमेश्वरकी चीज है। जैसे हवा, पानी, सूरजकी रोशनी सबके लिअे है, वैसे ही जमीन भी सबके लिअे है। और जैसे हवा, पानीका हिस्सा हरअेकको मिलता है, वैसे ही हरअेकको मिट्टीका हिस्सा मिलना ही चाहिये। हरअेकको मांके पास पहुंचनेकी गुंजाअिश होनी चाहिये।

३. तीसरी बात गांव-गांवके लोगोंको अिसकी तालीम मिलनी चाहिये कि धन्धे कैसे बढ़ेंगे, खेती कैसे सुधरेगी। आजकलकी तालीम यानी 'येस-फेस'। हम समझते नहीं कि घोड़ेको हॉर्स कहते हैं अिससे लाभ क्या होता है? हां, अेक शब्द नया जरूर सीखते हैं। लेकिन क्या अेक शब्द सीखनेसे खेतीमें अधिक पैदा होता है। हां कुछ लोग अंग्रेजी सीखना चाहें तो सीख सकते हैं। अिससे अंग्रेजी भाषाके ग्रंथ हमारी भाषामें ला सकेंगे। लेकिन केवल 'येस-फेस' से काम नहीं होगा। कोअी अंग्रेजी सीखेगा, कोअी फ्रेन्च सीखेगा और कोअी चीनी सीखेगा और कोअी जापानी सीखेगा, ताकि सारी दुनियाका ज्ञान हम प्राप्त कर सकें। आज हर कोअी अंग्रेजी सीखता है और अंग्रेजीसे ही दूसरे देशोंका ज्ञान प्राप्त होता है यानी अंग्रेजोंकी नजरसे ही हम देखते हैं। हम सब भाषायें सीखेंगे। लेकिन हमारे देहाती भाअी यैस-फेस क्यों सीखेंगे? देहातमें 'येस-फेस' की तालीम नहीं चलेगी। देहातमें तो तालीम चलेगी खेती कैसे बढ़े? गांव कैसे सुखी हों? अिलजुलकर कैसे रहना? दुनियाके साथ व्यवहार कैसे करना, संगठन कैसे करना, प्रेमसे कैसे रहना? वह सारा हमें सीखना है और हम नहीं मानते कि छः घंटोंका स्कूल हो। अुसमें गरीबके लड़के कैसे जायेंगे? वे तो तालीमसे वंचित रह जायेंगे, क्योंकि अुनको पिताजीके साथ खतम जाना होता है। अिसलिअे गांवमें अेक-अेक घंटेका स्कूल हो। विद्यार्थी और शिक्षक दिन भर काम करें। शिक्षकको पैसा नहीं मिलेगा। अुसे तो हर किसान अनाजका अेक हिस्सा देगा। मकानकी जरूरत नहीं, पैसेकी जरूरत नहीं। अेक घंटा सिखा दिया बस। ये लोग छः छः घंटे सिखानेका नाटक करते हैं। मास्टर बैठे हैं, बीड़ी पी रहे हैं। बच्चोंको अेक हिसाब दे दिया। बच्चे अुसे कर रहे। और यह भी देखा है कि मास्टर साहब सोते हैं। बच्चे बोलने लगते हैं तो मास्टर कहते हैं, अरे बच्चो, अपना काम करते रहो। यानी मुझे भी मेरा काम करने दो। मुझे सोने दो। नहीं तो मेरा काम कैसे बनेगा। अैसे स्कूलोंमें पढ़नेवाले आलसी होते हैं। हमें अैसे स्कूल नहीं चाहिं। ये तीन काम हमें फौरन करने चाहियें।

लोग कहते हैं कि तालीमका खर्चा बहुत आयेगा। शिक्षकको पैसा अधिक देना पड़ेगा। वह हम नहीं दे सकेंगे। पंडित नेहरूको

www.vinoba.in

शिक्षकोंने बुलाया था। अुन्होंने अुनके बीचमें कहा, मुझे आपके पास आनेमें बहुत शरम आती है, क्योंकि मुझे आपकी हालत मालूम है। और अुसके लिअे मेरे पास अिलाज नहीं है। यह आपके प्रधानमंत्री बोलते हैं। मां कहती है बेटा, मेरे पास तेरे लिअे अुपाय नहीं है। हम कहते हैं अुपाय है। अेक दफा मौलाना अबुलकलाम आजादने कहा था, आप हमें स्कीमें देते हैं, पर हमारा दिमाग स्कीमोंसे भरा है। और हमारी जेबें खाली हैं। बात सही है। भिखारीकी सरकार भिखारी ही होगी।

हमारी जो योजना है अुसमें तालीमके लिअे पैसेकी आवश्यकता ही नहीं है। शिक्षक विद्यार्थियोंको अेक घंटा सिखायेगा और दोनों दिन भर काम करेंगे, अैसी हमारी योजना है। तेलंगानामें घूमते थे। गोदावरीके किनारे अेक छोटासा देहात था। ब्राह्मण वहां रहते थे। हमने पूछा, क्या यहां स्कूल है? अुन्होंने कहा नहीं है। मैंने कहा, ब्राह्मण क्या हजामत करते हैं? कहने लगे सरकारने स्कूल नहीं बनाया? मैंने पूछा आप लोगोंके पेटका गुजारा कैसे होता है? वे कहने लगे कि धर्मकाज करते हैं, लोग कुछ देते हैं, अुसीसे चल जाता है। हमने कहा, लोगोंको आप पर विश्वास है, तो अेक अेक घंटा पढ़ाते क्यों नहीं? तो अुन्होंने बात मान ली। और वहां स्कूल शुरू हो गया। ब्राह्मण भी कहते हैं कि स्कूल नहीं है! हम कहते हैं कि स्कूलके लिअे पैसा नहीं चाहिये। स्कूलके लिअे तो अकल चाहिये। गांव-गांवमें पढ़ना-लिखना शुरू हो सकता है, अगर वैसी तालीम हो।

जमींदार पूछते हैं हम जमीन तो देते हैं, लेकिन क्या आपकी योजनामें हमें भी खेती करनी पड़ेगी? हम कहते हैं, आप बूढ़े हैं, आपको आदत नहीं है। आप पर तो हम यह नहीं लादना चाहते, लेकिन आपके बच्चोंको करनी होगी। क्योंकि आगे हिन्दुस्तानमें जो खेती नहीं करेगा, अुसके पास खेती नहीं रह सकेगी। कहते हैं, हमें बड़ा मुश्किल होगा। हम कहते हैं, अिसलिअे हम दस सालकी मुहलत देते हैं। लड़कोंको तैयार कीजिये। आपने अपने पास पुस्तक रखी है, लेकिन पुस्तक पढ़ना जानते नहीं और कहते हैं कि पुस्तकका मैं मालिक हूं। हम कहते हैं कि अरे भाअी, जो पढ़ना जानता है, अुसे वह पुस्तक दे दो। तो ये सारे भेद मिटाने हैं। और यह सारा काम भूमिके बंटवारेसे करना है, ग्रामोद्योगोंके जरिये करना है, तालीम बदलकर करना है। अैसा जब होगा तब हिन्दुस्तानकी ताकत बढ़ेगी, भेदभाव मिटेंगे और अुस समय जो ताकत बनेगी अुससे हिन्दुस्तान पर कोअी आक्रमण नहीं कर सकेगा।

विनोबा

प्रस्तावित कोलम्बो-परिषद्

[श्रीलंकाके प्रधानमंत्री सर जान कोटेलावालाने अभी कुछ दिन पहले अपने दिल्ली-प्रवासके दरम्यान 'अिन्डियन कौंसिल ऑफ वर्ल्ड अफेयर्स' और 'अेशियन रिलेशन्स आर्गनाअिज़ेशन' नामक संस्थाओंके सदस्योंके सामने बोलते हुअे अेक भाषण दिया था। अुसमें अुन्होंने बताया कि दक्षिण-पूर्वी अेशियायी देशों, यानी बरमा, श्रीलंका, भारत, अिन्डोनेशिया और पाकिस्तानके प्रधानमंत्रियोंकी परिषद् बुलानेमें अुनका अुद्देश्य क्या है। प्रसंगवश अुन्होंने अेशियाकी मौजूदा परिस्थितियों पर भी अेक सरसरी निगाह डाली। भाषणकी प्रेस-रिपोर्ट नीचे अुद्धृत है। आशा है पाठकोंको अुससे दुनियामें और खासकर दक्षिण-पूर्वी अेशियामें शान्तिके सवालका स्वरूप समझनेमें मदद मिलेगी। हम अेक आजाद लोकतंत्रके नागरिक हैं, और आजाद लोकतंत्रके नागरिकोंको यह सवाल बखूबी समझ रखनेकी बड़ी जरूरत है।

२८-१-'५४ —म० प्र०]

भारत, पाकिस्तान, बरमा, अिन्डोनेशिया, और सीलोनकी आजादी, चीनमें हो रही अशान्तिपूर्ण हलचल, वीटनाम और कोरियाकी चिन्ताजनक परिस्थिति और मलायाके कतिपय हिस्सोंमें आतंकवादी अुपद्रवोंके कारण आजकी राजनीतिक दुनियामें अेशियाका स्थान और महत्त्व बहुत अूपर आ गया है। अेशियाका वर्षों तक दुनियामें वही स्थान रहा है, जो शरीरमें हृदयका है; अुसने हृदयकी तरह ही अपना रक्त देकर दुनियाको जीवित रखा है। वह अपनी विशाल प्राकृतिक संपत्ति सदियोंसे दुनियाके हितमें खर्च करत आया है। खेदकी बात है कि अुपनिवेशवादने अुसकी अिस अुदारताका दुरुपयोग किया — अुसने अेशियाकी संपत्तिसे पश्चिमकी समृद्धिका निर्माण किया और पूर्वके विकासका कोअी विचार नहीं किया। तब अिसमें क्या आश्चर्य है कि अगरचे यह दुनियाका सबसे ज्यादा धनवान हिस्सा है, फिर भी यहां बसनेवाला मानव-समाज दुनियामें सबसे ज्यादा गरीब है और अुसके आर्थिक जीवनका स्तर सबसे ज्यादा नीचा है?

दुनियाकी आधीसे अधिक आबादी अेशियामें, दुनियाके क्षेत्रके पंचमांशमें केन्द्रित है। अेशियाकी संपत्तिका, जिसने लम्बे समय तक दुनियाका पोषण किया, अैसा विकास जरूर किया जा सकता है कि वह अपनी मौजूदा जनसंख्यासे ज्यादा बड़ी जनसंख्याका आजके वनिस्बत कहीं अधिक अुन्नत स्तर पर भरण-पोषण कर सके। लेकिन अेशियाका यह आन्तरिक विकास तब तक संभव नहीं है जब तक अुसके पड़ोसियोंमें अेक-दूसरेके प्रति डर और अविश्वास है। हमें याद रखना चाहिये कि अिन सब पड़ोसियोंके सामने अेक ही समस्या है; अुन्हें दवाओंके अुत्पादन और स्वच्छताके विस्तारके जरिये अिस खण्डकी जनताको परेशान करनेवाली बीमारियोंसे लड़ना है; अुत्तम बीज, खाद और सुधरी हुअी पद्धतियोंकी जमीनकी मददसे पैदावार बढ़ाकर अन्न और पोषणकी कमीसे लड़ना है; और घर तथा निवास-स्थानोंके सुव्यवस्थित निर्माणके जरिये घरोंकी तंगी और बड़े शहरोंकी गरीब बस्तियोंमें आबादीकी अधिकता और जगहके अभावके कारण अुत्पन्न होनेवाली गंदगीसे लड़ना है। यही अेक लड़ाअी हम सबको लड़नी है और वह ठीक हमारे दरवाजे पर मुंह बाये खड़ी हमें चुनौती दे रही है। अिस चुनौतीको स्वीकार करनेमें हम जितनी देर लगाते हैं, साम्यवादका घिनौना खतरा अपना सिर त्यों-त्यों अूपर अुठाता जाता है।

कहनेकी आवश्यकता नहीं कि परिस्थिति अितनी शोचनीय है कि अेशियाके सारे नेताओंका ध्यान और हर मनुष्य और स्त्रीकी पूरी कोशिश अुसे सुलझानेमें लगना चाहिये। अेशियाके सवाल हमारे सवाल हैं और वे तभी सुलझ सकते हैं, जब हम अुन्हें सुलझानेकी प्रामाणिक कोशिश करें और दुनियाको दिखा दें कि हम अुनकी मददके लिअे ठहरे नहीं रहे, बल्कि हमने काम शुरू कर दिया है।

अेशियाके भविष्यका निर्माण बाहरसे मिले हुअे दान पर, विदेशी राष्ट्रोंके लड़नेवाले समुद्री जहाजोंकी मददसे या शक्तिका संग्रह करके नहीं किया जा सकता। युद्ध और अविश्वाससे प्रेरित अर्थनीति बरबादीकी अर्थनीति है। युद्ध तो अितिहासके आरंभसे होते आये हैं, लेकिन सुख-शान्तिकी आदर्श दुनियाका निर्माण अुन्होंने नहीं किया; युद्धकी राहसे वह कभी हो भी नहीं सकता। अेशियाकी आजकी आर्थिक हालतको देखते हुअे बड़ी सेनाअें और सैनिक खर्च हमारे लिअे असह्य बोझ ही हो सकता है। अुससे हमारा आर्थिक विकास रुकेगा और जनताकी तकलीफें कायम रहेंगी और बढ़ेंगी। अिसलिअे अेशियाके नेताओंको चाहिये कि वे आपसमें मित्रता-पूर्वक पूरी और स्पष्ट चर्चा करें और संदेह तथा अविश्वासके कारणोंको दूर कर डालें।

अिसलिअे जब मैंने अपने देशमें प्रधानमंत्रीका पद संभाला, तो यह सुझाव रखा कि अिन्डोनेशिया, बरमा, भारत, पाकिस्तान और सीलोनके प्रधानमंत्रियोंकी अेक परिषद् बुलाअी जाय और अिन

www.vinoba.in

पड़ोसी देशोंमें मैत्री, सद्भावना, सहयोग और प्रगतिके मार्गमें जो अड़चनें हों, अुन्हें दूर करनेकी कोशिश की जाय। यह जरूरी नहीं है कि दक्षिण-पूर्वी अेशियाके विकासके लिअे विचार और कार्यका मेल साधनेकी कोशिशमें अिन देशोंकी अपनी राष्ट्रीय विशेषताओंको मिटाना पड़ेगा। सच तो यह है कि अिस दिशामें जो बाधायें सामने आयेंगी, अुनका मुकाबला करनेमें अिन देशोंकी अपनी-अपनी विशेषतायें हमारे लिअे बहुत कीमती सहायक सिद्ध होंगी। मैं मानता हूं कि जिस देशके राष्ट्रीय होनेका दावा हम करते हैं, यदि अुसके प्रति हमारे मनमें प्रेम और वफादारीकी भावना नहीं है, तो राष्ट्रीयत्वका कोअी अर्थ नहीं रह जाता। अपनी आजादीकी रक्षाके लिअे देश-भक्तिकी भावना हमारा अेक मुख्य बल है और हमारे निजी मामलोंमें साम्यवादियोंकी प्रवृत्तियों या किसी दूसरी तरह होनेवाले विदेशी हस्तक्षेपके खिलाफ अुसे बड़ीसे बड़ी कीमत देकर भी बचाना चाहिये। साम्यवादको, जिसकी वफादारी अपने आन्तरराष्ट्रीय संघटनके सिवा और किसीके प्रति नहीं, यदि हम अेशियामें पनपता हुआ देखते हैं, तो अिसका कारण यह है कि लोकतंत्रकी अपनी स्वीकारी हुअी जीवन-पद्धतिके अनुसार हम अपने नागरिकोंकी आजादीका सम्मान करते हैं। साम्यवाद हमारी जनताकी धार्मिक, सांस्कृतिक और सामाजिक परम्पराओंसे बिलकुल बेमेल है। अुसका सामना करनेमें भी दक्षिण-पूर्वी अेशियाके देश अलग-अलग कोशिश करनेके बजाय मिलकर कोशिश करें, तो ज्यादा लाभ होगा।

अेशियाके प्रधानमंत्रियोंकी परिषद्का यह विचार अेशियाकी मौजूदा मुश्किलों और जरूरतोंसे पैदा हुआ है। अेशियाके अिन देशोंमें बहुत लम्बे समयसे सांस्कृतिक, धार्मिक, वंशगत और व्यापारिक संबंध रहे हैं, अुनमें आपसी सहयोगकी सदियों पुरानी परंपरा है। अुससे साफ सूचित होता है दक्षिण-पूर्वी अेशियाके देशोंके नेताओंके नेतृत्वकी सफलता अिसी दिशाकी तरफ बढ़नेमें है। ६० करोड़ आदमियोंकी आवाज चौथाअी दुनियाकी आवाज है। अुनका मुंह बन्द करनेके लिअे या अुन्हें डरा-धमकाकर अनचाहा काम करवानेके लिअे यहां अब अुपनिवेशवाद नहीं रह गया है। दक्षिण-पूर्वी अेशियामें आदमियोंकी, भौतिक वस्तुओंकी, साधनोंकी या अुपयुक्त नेताओंकी कमी नहीं है। अुसकी जनता आजादीके साथ निर्णय कर सकती है कि अुसे क्या चाहिये और क्या नहीं चाहिये।

अिस क्षेत्रके बाहरके देशोंके साथ मित्रतापूर्ण संबंधोंकी जरूरतमें कोअी शक नहीं, लेकिन वे दक्षिण-पूर्वी अेशियाकी आजादीकी स्थितिके अनुरूप होने चाहिये। आजाद देशोंके आपसी संबंधोंमें अपना अेक गौरव होता है। बाहरके देशोंसे हमारे संबंधोंमें अिस गौरवकी रक्षा होनी चाहिये। बाहरके जो देश हमारी मदद करना चाहेंगे, अुनका हम हमेशा स्वागत करेंगे, लेकिन यह स्वागत अुस तरहका होगा जिस तरह कोअी घर-मालिक बाहरके आये अभ्यागतोंका करता है। दक्षिण-पूर्वी अेशियाके ये आजाद देश अुस गौरवकी, हरअेक राष्ट्रकी राष्ट्रीय आजादीकी, और भविष्यके निर्माणमें जो चीज हमारा सबसे बड़ा आधार है, अुस लोकतंत्रकी रक्षाके प्रयत्नमें अेक-दूसरेकी सहायता और सहयोगकी आशा रखते हैं।

परिषद्में अिकट्ठे होने पर हम किन विषयोंकी चर्चा करेंगे, यह तो अभी समयके गर्भमें है; लेकिन मुझे अिसका पूरा निश्चय है कि हमारी यह परिषद् अुन खतरोंके विषयमें, जो हम पर दुबारा हावी हो जाना चाहते हैं, हमारी जागरूकताका और अेशियाके अिस हिस्सेकी अेकताके हमारे बोधका प्रत्यक्ष प्रमाण होगी। अगर दक्षिण-पूर्वी अेशियाके प्रधानमंत्रियोंके अिस संमेलनका कुछ अच्छा परिणाम आया, और मैं मानता हूं कि आयगा, तो अिस विचारको कार्यका रूप देनेकी अपनी कोशिशके बदलेमें वही मेरा संतोष होगा।

(अंग्रेजीसे)

अुपनिवेशवाद : गुलामीका ही अेक रूप

लंदनके मशहूर साप्ताहिक 'फ्रीडम'के १२ दिसम्बर, १९५३के अंकमें अिटलीके अेक अराजकतावादी (१८६३–१९३२)का यह कथन अुद्धृत किया गया है, "जब विधायक अुद्देश्योंकी प्राप्तिके लिअे हिंसाका अुपयोग किया जाता है, तब या तो यह कोशिश बिलकुल निष्फल जाती है, या फिर वह दमन और शोषणकी स्थापना कर डालती है।"

और शायद अिस अुद्धरणके समर्थनमें ही अुसने अपने पहले पृष्ठ पर अफ्रीकामें युरोपके औपनिवेशिक शासनकी निम्नलिखित आलोचना की है:

> "हमारी सरकारका औपनिवेशिक विभाग अफ्रीकी शासकोंको गद्दीसे अुतारनेका काम लगातार करता जा रहा है। अिस सिलसिलेमें पहले सेरेस्ते और चेकेडीखामाको पदच्युत किया गया था। बादमें फ्रेंच सरकारने मोरक्कोके सुलतानको पदच्युत किया। और अब हमारे औपनिवेशिक मंत्री मि० लिटलटनने बुगाण्डाके कबाका मूटेसाको। बुगाण्डा युगाण्डाका मुख्य प्रदेश है। ये अुदाहरण बताते हैं कि साम्राज्यवादी शक्तियां देशी राजाओंसे किस नीतिका अनुसरण करनेकी अपेक्षा रखती हैं, साथ ही वे स्पष्ट कर देते हैं कि औपनिवेशिक शासनकी जड़में निरे पशुबलका जोर है, कोअी परोपकारकी भावना नहीं।"

युरोपीय साम्राज्यवादके अिन तौर-तरीकों पर हमें कोअी आश्चर्य नहीं होता। हमारे देशमें भी, १९वीं सदीमें, जो देशी राज्य ब्रिटिश सरकारके संरक्षणमें आ गये थे, अुनमें अिस तरह राजाओंको गद्दीसे अुतारनेके अनेक अुदाहरण मिलते हैं। सवाल यह है कि क्या आज भी, जब कि साम्राज्यवादकी कोअी प्रतिष्ठा नहीं रही है और अुसे युद्धोंके पैदा होनेका अेक मुख्य कारण माना जाता है, ब्रिटिश राष्ट्र अुसी पुरानी तिरस्कृत पद्धति पर ही चलता रहेगा? और जिन लोगोंको अिस पद्धतिके दमनका शिकार होना पड़ रहा है, अुनके लिअे सवाल यह है कि अिस औपनिवेशिक गुलामीसे आजादी हासिल करनेके लिअे वे कैसी तैयारी करें? अैसा मालूम होता है कि वे गांधीवादका रास्ता अपना रहे हैं। बेहतर होगा अगर साम्राज्यवादी शक्तियां भी अैसा ही सबक सीख लें और जिस तरह मनुष्योंको गुलाम बनानेकी प्रथा तोड़ दी गयी थी, अुसी तरह वे खुद या यूनो संस्था यह घोषणा कर दे कि अुपनिवेशवाद, जो कि गुलामीकी प्रथाका ही आधुनिक रूप है, तनातनी और संघर्षको जन्म देता है जिसके फलस्वरूप युद्ध और रक्तपात होता है, अिसलिअे हम अुपनिवेशवादको त्याज्य ठहराते हैं। अुपनिवेशवाद आखिर अेक बाहरी शासक द्वारा किसी देशकी जनताके खिलाफ अुसका शोषण करनेके अुद्देश्यसे की जानेवाली हिंसाके सिवा क्या है? जैसा कि अुपर्युक्त अिटालियन अराजकतावादी लेखकने कहा है, अुपनिवेशवाद दमन और शोषणकी स्थापना करता है। फ्रांस और पुर्तगालकी हिन्दुस्तानमें बची हुअी छोटी-छोटी बस्तियां तक अिस बातका अुदाहरण पेश करती हैं। अुपनिवेशवाद राजनीतिक गुलामी है और अिसलिअे वह जनताके बुनियादी अधिकारका अस्वीकार है। यूनोको कहना चाहिये कि आधुनिक राष्ट्रोंके लिअे वह कलंकरूप है, और अिस असभ्य पद्धतिका त्याग होना चाहिये।

(अंग्रेजीसे)

मगनभाई देसाई

www.vinoba.in

गांधीजी और अुनकी कार्यपद्धति*

३

कुछ ही दिन बाद, मैं अुनके पास साबरमतीमें अुनके सत्याग्रह आश्रममें रहनेके लिअे चला गया। आश्रम-जीवनके रहस्यसे अपरिचित व्यक्तिको पहली नजरमें आश्रम अेक बहुत रूखी-सूखी नीरस जगह मालूम होती। अुसे लगता कि लोग वहां बिलकुल मामूली काम करते रहते हैं, जिनमें कोअी मजा नहीं है; मजदूरोंकी तरह मशक्कत करते हैं और आजकी सभ्य दुनियाकी सुविधाओंके अभावमें आदिम कालका कठोर जीवन बिताते हैं, जिसका कोअी अर्थ नहीं है। यह अनुभव कअी लोगोंको आता था। शिक्षित वर्गके कअी व्यक्ति वहां अत्यन्त अुत्साहपूर्वक पहुंचते और जब वे देखते कि यहां तो 'राजनीतिक हलचलका चिह्न भी नजर नहीं आता' तो निराश होकर भाग खड़े होते। लेकिन यह जगह ही अुनकी सारी राजनीतिक प्रवृत्तिका मूल थी। अिसका रहस्य तब खुलता था, जब व्यक्तिका ध्यान आश्रम-जीवनकी प्रतिज्ञाओं — अुन आध्यात्मिक व्रतों पर जाता, जिनका पालन आश्रमवासी करते थे। ये व्रत अिस प्रकार थे — विचार, वाणी और कर्ममें सत्यका पालन, अहिंसा, अपरिग्रह, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अुसका सहचारी अस्वाद, सर्व-धर्म-समभाव, जाति-पांतिकी भावनाका और खासकर अस्पृश्यताका त्याग, स्वदेशी अथवा स्वयंपूर्णता, और अंतिम व्रत अभय, जो कि अिन सबोंका आधार है और अुनका सुपक्व फल भी। अिच्छा रहते हुअे भी, अिन व्रतोंके महत्त्व और अुनके आपसी सम्बन्धकी व्याख्यामें मैं यहां नहीं पड़ूंगा। अितना ही कहना काफी है कि अुन सबका अुत्पत्तिस्थान सत्य है, जिसे व्रतधारीको अपने नित्यके जीवनमें हासिल करना है। जो भी व्यक्ति अखिल मानव-समाजके साथ अपनी अेकता सिद्ध करना चाहता है और सत्याग्रहकी शक्तिका — जो अुससे स्वतः प्रगट होती है — विकास करना चाहता है, अुसे अिन व्रतोंका पालन करनेकी अनिवार्य आवश्यकता है।

लेकिन अुस अहिंसक युद्धसे, जिसने भारतको अुसकी आजादी दिलायी, अिस आश्रम-जीवन या अिन व्रतोंकी जड़में निहित अुसके जीवन-दर्शनका क्या सम्बन्ध है? अिस प्रश्नका अुत्तर यह है: आश्रममें प्रवेश करनेके कुछ ही दिनों बादकी बात है। अेक दिन शामको घूमनेमें मैं गांधीजीके साथ था। घूमनेका मार्ग साबरमती जेलकी तरफ जाता था। अुसके नजदीक पहुंचे तो अुसकी ओर संकेत करते हुअे गांधीजीने कहा, "यह हमारा दूसरा आश्रम है!" बादमें अिस कथनका अर्थ समझाते हुअे अुन्होंने कहा, "हमारे आश्रममें दीवालें नहीं हैं। कोअी दीवालें हैं तो हमारे व्रतोंकी। लेकिन वे हम पर रोक लगानेके लिअे नहीं, हमारी रक्षाके लिअे हैं। सच्ची स्वतंत्रताका स्वाद हमें तभी मिलता है, जब अुनका स्वेच्छापूर्वक पालन करते हैं। अुनसे मिलनेवाली शक्तिके बल पर हम कहीं भी जा सकते हैं, आ पड़नेवाली किसी भी परिस्थितिका मुकाबला कर सकते हैं, और हमें कभी हारने या लाचारी स्वीकार करनेका मौका नहीं आ सकता। हमने आश्रममें जो जीवन-विधि अपनायी है, अुसमें हमारी कल्पना यह रही है कि वह कैदखानेके जीवनसे भी कठोर हो। हमारे पास हमारा कोअी परिग्रह नहीं, जिसे कोअी हमसे छीन सके। हमें कैदमें रखा जाय तो हमें जीभके स्वादकी या किसी दूसरे शारीरिक सुखकी कमी खटकनेवाली नहीं है, क्योंकि अुन्हें हमने पहलेसे ही छोड़ रखा है। हम किसीसे डरेंगे भी नहीं, क्योंकि आश्रम-जीवनका अभ्यास करते हुअे हम तो सदा भगवान्‌से डरकर चलना सीख चुकेंगे और अिसलिअे स्वतंत्रता हमारा जन्मसिद्ध हक है — अिस सत्यकी साख भरते हुअे हम सहर्ष मृत्युको गले लगायेंगे। और चूंकि सत्याग्रही कैदी जेलके अनुशासनका भी स्वेच्छासे पालन करता है और जेल-जीवनके प्रसंगमें आनेवाली तकलीफोंको सत्यकी राहके शूल मानकर अुनका स्वागत करता है, अिसलिअे हम जेलकी चहारदीवारीके अन्दर पक्षियों जैसे खुश और आजाद रहेंगे। और जब सारा हिन्दुस्तान अिस कलाको सीख लेगा, तब वह आजाद हो जायगा; क्योंकि यदि अुस समय विदेशी शासक सारे हिन्दुस्तानको ही जेलमें बदल डालें तो भी वे अुसकी आत्माको कैद नहीं कर सकेंगे।" यह बात १९२० में कही गयी थी। अुसका सत्य सन् १९४२में प्रगट हुआ जबकि सरकारने सारे हिन्दुस्तानको ही सचमुच अेक बड़ा जेलखाना बना दिया था; लेकिन फिर भी वह अुसकी आजादी हासिल करनेकी अुबलती हुअी अिच्छाको नहीं कुचल सकी।

आअिन्स्टाअिनने हमें बताया है कि पदार्थ (matter) और शक्ति (energy) दोनों अेक ही सिद्धान्तके अनुसार व्यवहार करते हैं। यह सिद्धान्त अुन्हें अेक ही अव्यवहित क्षेत्रमें बांधता है। गांधीजी व्यक्ति, परिवार, आश्रम और बाहरकी व्यापक राजनीतिक दुनियाको अेक ही अव्यवहित क्षेत्र मानते थे। वे मानते थे कि अुनके मूलमें अेक ही नियम है, जो अुन्हें अुनका अर्थ प्रदान करता है और अुनका नियंत्रण तथा मार्गदर्शन कर सकता है। आश्रम अुनके लिअे अुनका बृहत्तर परिवार था, और राजनीति आश्रमका ही विस्तृत रूप। राजनीतिको अुसके कर्मकाण्डी पुरोहितोंने बहुत जटिल, दुर्गम और कठिन बना रखा था, मानो वह कोअी गूढ़ विद्या हो, जो नीति-अनीतिकी सीमाके बाहर है और जिसका रहस्य कुछ अिने-गिने दीक्षा पाये हुअे लोग ही खोल सकते हैं। गांधीजीने जो कुछ किया अुसका अेक हिस्सा यह भी था कि राजनीति पर पड़ा हुआ यह रहस्यका पर्दा फेंक दिया जाय, अुसे लोगोंकी नजरोंके सामने प्रकाशमें लाकर दिखाया जाय कि वह मेहनत-मशक्कत करनेवाली जनताके सुखकी और व्यक्तिके सर्वोच्च विकासकी योजना और प्राप्ति करानेवाली प्रवृत्ति है। अिसलिअे अुसे अैसा रूप देना जरूरी था कि वह हमारी जनताके प्रतिनिधि-रूप सामान्य किसानके दैनिक जीवनकी सादी बातोंसे और समाज तथा दुनिया जिन बुनियादी सत्योंके जाने या अनजाने अभ्यास पर टिकी हुअी है अुनसे पूरा मेल खा जाय। और चूंकि गांधीजीकी आश्रमकी प्रवृत्तियोंका अुद्देश्य अिन्हीं विषयोंकी बुनियादी खोज करना था, अिसलिअे आश्रमकी साधनामें ही अुनकी राजनीतिकी भी चाबी थी।

(अंग्रेजीसे)

प्यारेलाल

* अिस भाषणकी पहली दो किस्तें क्रमशः ३०-१-'५४ और ६-२-'५४ के अंकोंमें प्रकाशित हो चुकी हैं।

शराबबन्दी क्यों?

भारतन् कुमारप्पा

कीमत ०-१०-० डाकखर्च ०-४-०

नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद-९

विषय-सूची

		पृष्ठ
संसारका पहला अहिंसक युद्धवादी	मगनभाई देसाई	४०१
आन्ध्रमें शराबबंदी	मगनभाई देसाई	४०३
अेशिया और विश्वशांति	मगनभाई देसाई	४०४
भारतको ताकतवर बनानेकी योजना	विनोबा	४०५
प्रस्तावित कोलम्बो-परिषद्	सर जॉन कोटेलावाला	४०६
अुपनिवेशवाद: गुलामीका ही अेक रूप	मगनभाई देसाई	४०७
गांधीजी और अुनकी कार्यपद्धति	प्यारेलाल	४०८
टिप्पणी:		
किसानोंमें अर्धबेकारीका परिमाण	विठ्ठलदास कोठारी	४०३

www.vinoba.in